

Q: (7) What do you mean by elasticity of demand. What are the different kinds of elasticity of demand?

माँग की लोच की अवधारणा अर्थशास्त्र का अत्यंत महत्वपूर्ण अवधारणा है। माँग को प्रभावित करने वाले तत्वों में परिवर्तन के फलस्वरूप माँग में जिस अनुपात में परिवर्तन होता है उसे माँग की लोच कहते हैं।

'आवृत्त'

Define elasticity of demand. What are the kinds of elasticity of demand?

माँग की लोच की परिभाषा कीजिए। माँग की लोच किसे प्रभावित करते हैं?

Ans: → माँग की लोच की अवधारणा अर्थशास्त्र का अत्यंत महत्वपूर्ण अवधारणा है। माँग को प्रभावित करने वाले तत्वों में परिवर्तन के फलस्वरूप माँग में जिस अनुपात में परिवर्तन होता है उसे माँग की लोच कहते हैं।

माँग की लोच का शब्दिक अर्थ माँग में परिवर्तन होता है लेकिन, अर्थशास्त्र में माँग के परिवर्तन के कारणों एवं परिवर्तन की मात्रा का भी विश्लेषण माँग की लोच के अन्तर्गत किया जाता है।

प्रो. मार्शल के अनुसार: —

“ बाजार में किसी वस्तु की माँग की लोच अधिक या कम तब कही जाती है जब किसी वस्तु के मूल्य में कमी होने के कारण माँग में अधिक या कम वृद्धि होती है अथवा मूल्य में वृद्धि होने के कारण माँग में अधिक या कम वृद्धि होती है। ”

मार्शल के उपर्युक्त परिभाषा से स्पष्ट है कि अगर मूल्य के परिवर्तन के कारण माँग में अधिक परिवर्तन होता है तो माँग की लोच अधिक तथा मूल्य में परिवर्तन के कारण माँग में अगर कम परिवर्तन होता है तो माँग की लोच कम होगी।

प्रो कोर्डिंग (Couliding) के शब्दों में :-

"Elasticity of demand may be defined as the percentage change in quantity demanded with could result from one percent change in its price."

"किसी वस्तु के मूल्य में एक प्रतिशत परिवर्तन के फलस्वरूप उसकी माँग में जितना प्रतिशत परिवर्तन होता है उसे माँग की लोच कहा जाता है।"

Cooulding की इस परिभाषा से माँग की लोच का सूत्र निकाला जा सकता है।

$$\text{माँग की लोच} = \frac{\text{माँग में प्रतिशत परिवर्तन}}{\text{मूल्य में प्रतिशत परिवर्तन}}$$

$$= \frac{\frac{\Delta Q}{Q} \times 100}{\frac{\Delta P}{P} \times 100}$$

$$= \frac{\Delta Q / Q}{\Delta P / P}$$

$$= \frac{\Delta Q}{Q} \div \frac{\Delta P}{P}$$

$$= \frac{\Delta Q}{Q} \times \frac{P}{\Delta P}$$

$$= \frac{\Delta Q}{\Delta P} \cdot \frac{P}{Q}$$

Miss Johan Robinson की परिभाषा भी अर्थ की दृष्टिकोण से कोर्डिंग से मिलती है। माँग की लोच सूत्र की अनुपातों का एक अनुपात इसकी कोई ईकाई नहीं होती है।

* माँग की लोच की प्रकार *

माँग की लोच के प्रकार का अध्ययन निम्नलिखित दो दृष्टिकोण से किया जाता है।

A* प्राकृतिक दृष्टिकोण से माँग की लोच के प्रकार:—

इस दृष्टिकोण से माँग की लोच के निम्नलिखित तीन प्रकार होते हैं।

(I) माँग का मूल्य लोच:—
 किसी वस्तु के मूल्य में परिवर्तन के कारण उसकी माँग में जिस अनुपात में परिवर्तन होता है उसे माँग का मूल्य लोच कहा जाता है।

$$\text{माँग का मूल्य लोच} = \frac{\Delta Q}{\Delta P} \cdot \frac{P}{Q}$$

(II) माँग की आय लोच:—
 उपभोक्ता की मौद्रिक आय में परिवर्तन के कारण वह किसी वस्तु की माँग में जिस अनुपात में परिवर्तन करता है उसे माँग का आय लोच कहा जाता है।

$$\text{माँग की आय लोच} = \frac{\Delta Q}{\Delta P} \cdot \frac{P}{Q}$$

आय की १ सेकतिह और १ के मगह १ लिखे हैं।

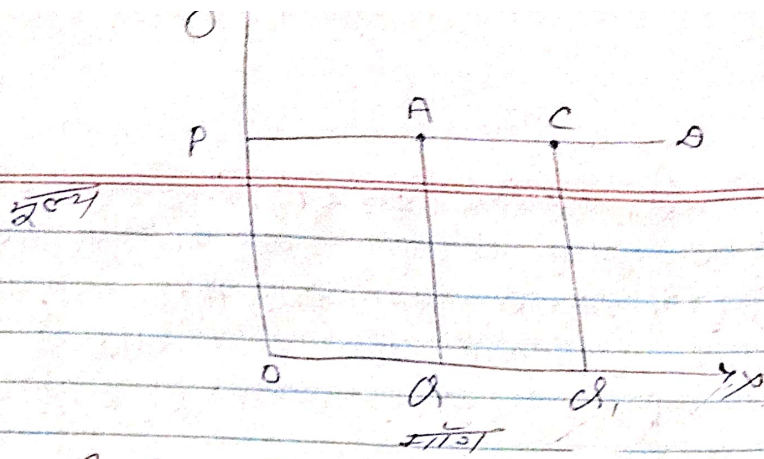
(III) माँग की आड़ी लोच:—
 किसी एक वस्तु के मूल्य में परिवर्तन के फलस्वरूप दूसरे वस्तु की माँग में जिस अनुपात में परिवर्तन होता है उसे माँग की आड़ी लोच कहते हैं।

$$\text{माँग की आड़ी लोच} = \frac{\Delta Q_x}{\Delta P_x} \cdot \frac{P_x}{Q_x}$$

B* माहा की दृष्टिकोण से माँग की लोच का प्रकार:—

माहा की दृष्टिकोण से माँग की लोच के निम्नलिखित दो प्रकार होते हैं:—

(I) पूर्णतः लोचदार माँग (ed = ∞):—
 किसी वस्तु के मूल्य में परिवर्तन नहीं होने पर भी माँग में बहुत अधिक अनुपात में परिवर्तन हो जाए तो उसे पूर्णतः लोचदार माँग कहा जाता है।

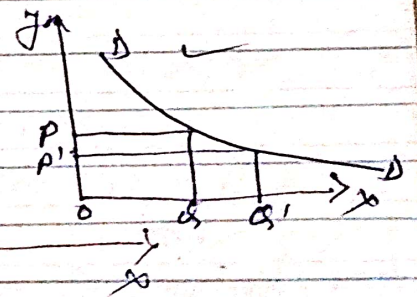
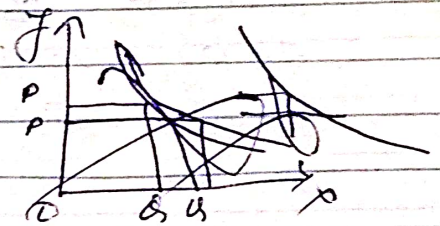
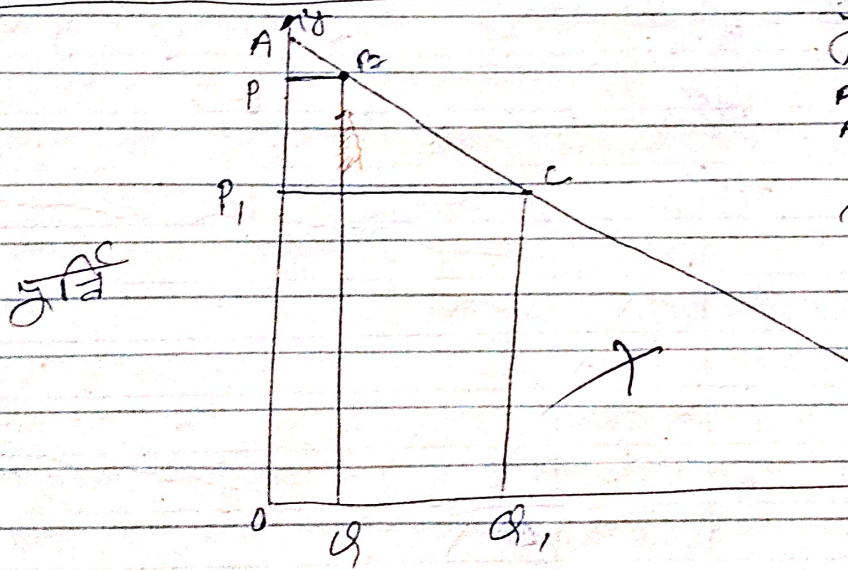


मांग की रेखा मांग अस के समानतर है और यह बदलती है कि मूल्य के स्थिर रहने पर भी मांग के किसी एक एक बढ़ाया या घटाया जा सकता है। इसकी मांग की लोच अन्नत है इसलिए इसे पूर्णतः लोचदार मांग कहा जा सकता है।

$$ed = \frac{\Delta Q}{\Delta P} \cdot \frac{P}{Q} = \frac{\Delta Q P}{\Delta P Q} = \infty$$

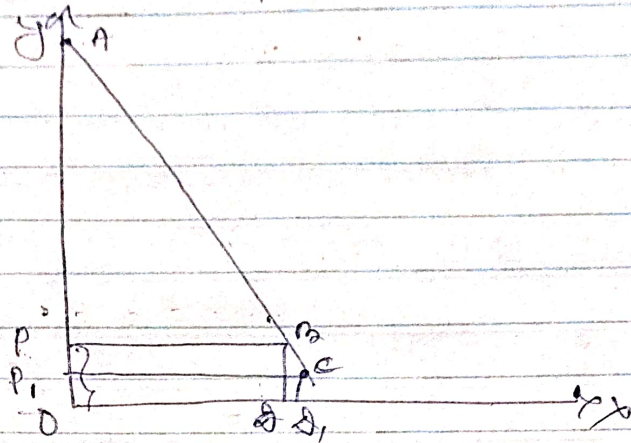
(ii) सापेक्षिक लोचदार मांग (ed > 1): - (एक से कम इकाई से कम है) किसी ~~अनुपल~~ वस्तु के मूल्य में जिस अनुपल में परिवर्तन होता है मांग में अगर उससे अधिक अनुपल में परिवर्तन हो तो उसे सापेक्षिक लोचदार मांग कहा जाता है।

Note ed = $\frac{\Delta Q}{\Delta P} \cdot \frac{P}{Q}$ > 1, अगर ग्रेड देन रहे तो ऊपर वाला बड़ा होगा < 1, लेंस देन रहे तो नीचे वाला बड़ा होगा = 1, बराबर रहे तो एक इकाई होगा



मांग की रेखा ABC कम ढल वाली है इसके मूल्य बिन्दु से ऊपर किसी बिन्दु से ऊपर मांग सापेक्षिक लोचदार है।
 $ed = \frac{\Delta Q}{\Delta P} \cdot \frac{P}{Q} > 1$
 $\therefore \Delta Q > \Delta P$

III) सापेक्षिक बेलोचकार माँग (ed < 1): -
 किसी वस्तु के मूल्य में जिस अनुपात में परिवर्तन होता है माँग में अगर उससे कम अनुपात में परिवर्तन हो तो उसे सापेक्षिक बेलोचकार माँग कहा जाता है।

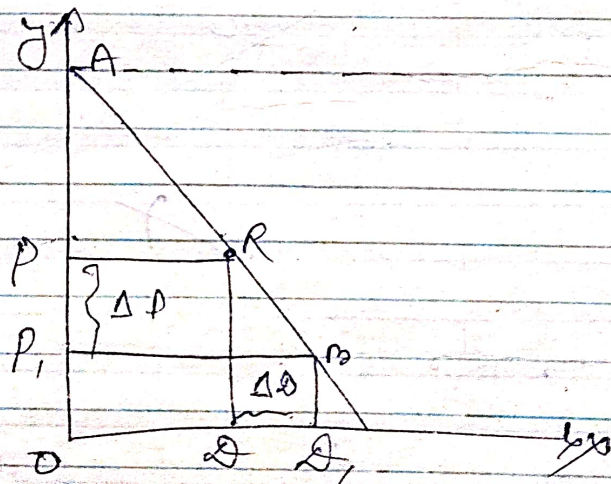


माँग की रेखा ABC की ढाल अधिक है उसके मध्य बिन्दु से नीचे किसी बिन्दु B पर माँग की लोच इकाई से कम है।

$$ed = \frac{\Delta Q}{\Delta P} \cdot \frac{P}{Q} < 1 \quad \left\{ \begin{array}{l} \Delta Q < \Delta P \\ \Delta P < \Delta Q \end{array} \right.$$

IV) समलोचकार माँग: (ed = 1): -

जिस अनुपात में किसी वस्तु के मूल्य में परिवर्तन होता है उसी अनुपात में अगर उसकी माँग में परिवर्तन होता है तो उसे समलोचकार माँग कहा जाता है।

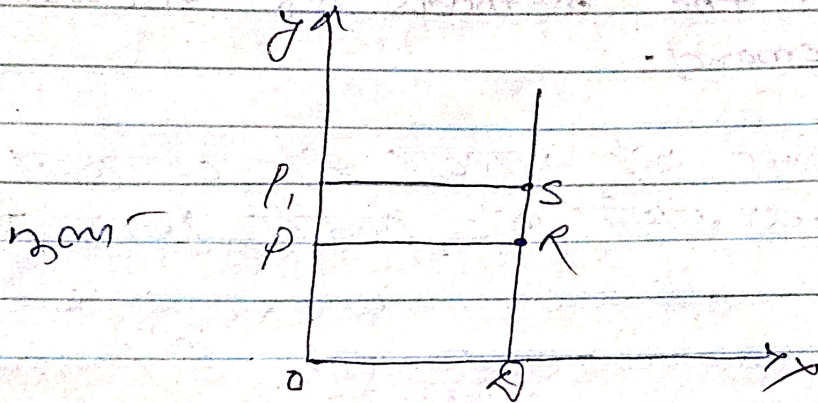


ARs माँग की रेखा के किसी बिन्दु R पर माँग की लोच इकाई के बराबर है।

$$ed = \frac{\Delta Q}{\Delta P} \cdot \frac{P}{Q} = 1 \quad \left\{ \begin{array}{l} \Delta Q = \Delta P \\ P = Q \end{array} \right.$$

⊗ पूर्णतः अलोपकार माँग (ed = 0): —

किसी वस्तु के मूल्य में परिवर्तन के कारण अगर उसकी माँग में कोई परिवर्तन ना हो वाँ उसे पूर्णतः अलोपकार माँग कहा जाता है।



DRS माँग की रेखा मूल्य अक्ष के समांतर है (अर्थात्) जो बतलाती है कि मूल्य में परिवर्तन होने पर माँग में कोई परिवर्तन नहीं होता है।

$$ed = \frac{\Delta Q}{\Delta P} \cdot \frac{P}{Q} = \frac{0}{\Delta P \cdot Q} = 0$$

The End